समकालीन स्त्री लेखन : भाषा, शिल्प एवं रचना विधान

अखिलेश कुमार,

शोध छात्र, हिन्दी विभाग

डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ।

समकालीन कथा साहित्य ने औद्योगिकीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति, अस्मितावादी विमर्श, पर्यावरणीय चिंता, शोषण और दमन के बदलते हुए विविध रूप और सर्वग्राही राजनीति के बढ़ते दबाव में कथाकार के सामने नयी चुनौतियाँ और सवाल खड़े कर दिये हैं। आज का कथा साहित्य प्रतिवाद और प्रतिरोध का स्वर लिए हुए है। इन सबके मध्य मनुष्य और मनुष्यता को उसकी संभावनाओं को बचाने की जिम्मेदारी साहित्य के अन्य रूपों के साथ कथा साहित्य पर भी है। समकालीन कथाकार सपनों की दुनिया में विचरण करने वाला जादूगर या देवता नहीं है बल्कि वास्तविक जगत के धरातल पर खड़ा अपने समय का सजग प्रहरी है। परिणामस्वरूप कथा साहित्य की भाषा, शिल्प एवं संरचना में भी परिवर्तन हुआ। सदियों से अपमानित, प्रताड़ित एवं अधिकारों से वंचित समुदाय के लिए अब पारम्परिक भाषा, शिल्प एवं संरचना में अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति कर पाना सम्भव न हुआ। आनन्द या रस की भाषा में न तो उसे सवारा जा सकता और न ही इसे उस पैमाने पर नापा जा सकता है। इस विशाल पीड़ा व आक्रोश विद्रोह के लिए रसमयी भाषा और वर्तनी पर्याप्त नहीं है, वह कमजोर, अर्थहीन, निष्प्रभावी एवं छोटी पड़ जाती है। रचना विधान अथवा शैली समकालीन कथा लेखन का महत्वपूर्ण पहलू है। 'शैली' अंग्रेजी शब्द 'स्टाइल' का हिन्दी पर्याय है। भोलानाथ तिवारी के अनुसार– ''शैली भाषिक अभिव्यक्ति का वह विशिष्ट ढंग है जो प्रयोक्ता के व्यक्तित्व तथा विषय से सम्बंध होता है तथा जो विचलन, चयन, सुसंयोजन, समानान्तरता एवं अप्रस्तुत विधान आदि सामान्य अभिव्यक्ति के लिए असुलभ उपकरणों पर आधृत होता है।''[1] रामरत्न भटनागर के अनुसार– ''किसी कवि या लेखक की शब्द–योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उनकी ध्वनि आदि का नाम शैली है।''[2]

समकालीन कथाकार आज वे आत्मकथात्मक, डायरी, पत्रात्मक, इण्टरव्यू संवाद तथा पूर्वदीप्ति शैलियों में रचनाएं कर रहे हैं। भाषा शैली की कोई निर्धारित सीमा नहीं होती क्योंकि भिन्न–भिन्न लेखकों की भिन्न–भिन्न भाषा शैली होती है। समकालीन कथाकारों ने मन की आन्तरिक भावनाओं एवं बदलते जीवन–मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए रचना विधान और भाषा शैली को उनके अनुरूप ढाला है अर्थात् इसमें नवीन प्रयोग किये हैं।

समकालीन कहानी का शिल्प अत्यंत आकर्षक और समृद्ध है। शिल्प का कैनवास इतना विस्तृत और व्यापक है कि पाठक इससे एक सुखद अनुभूति प्राप्त करता है। उपन्यास की शिल्प योजना में भाषा–रचना विधान (शैली) का अत्यधिक महत्व है। भाषा ही उपन्यासकार की सफलता असफलता की कसौटी है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा लेखक अपने विचारों एवं भावों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। किसी भी साहित्यिक कृति की सफलता उसकी भाषा, शैली या रचनात्मक संगठन पर निर्भर

करती है– ''भाषा ऐसे सार्थक शब्द समूहों का नाम है, जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरे के मन तक पहुँचाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होते हैं।''[3] समय के साथ भाषा भी परिवर्तित होती रहती है। ''रचनाकार के समक्ष भाषा का संकट समय के सज्ञथ–साथ उत्पन्न होता रहता है और अगर वह समय की नब्ज को पकड़कर आधुनिक जीवन के मुहावरों को तलाशकर उसके अनुरूप अपनी भाषा गढ़ता है।''[4] तभी वह भाषा अपनी समय की पहचान को अभिव्यक्ति दे पाती है वरना किसी अन्य प्रकार के शब्दों की संरचना से उसका कोई मतलब नहीं।

''आकार की दृष्टि लंबी कहानियाँ तथा लघु कथाएँ, विभिन्न शैलियों की दृष्टि से व्यंग्य, फंतासी, लोक कथा शैली, पुरातन एवं पौराणिक कथाओं की वर्तमान और नूतन संदर्भ में प्रस्तुति, कहानी में नाट्य शैली के कथोपकथन, कई–कई कथा खण्डों की एक प्रभाववित्ति रिपोर्ताज, रेखाचित्र, पंचतंत्र, बैताल पच्चीसी और सिंहासन बत्तीसी, किस्सा तोता–मैना और किस्सा हातिमताई आदि की शैलियों के नूतन प्रयोगों ने कहानी के प्रचलित रूपबंध (फार्म) को तोड़ा है। वर्णन के विस्तार की जगह सार्थक मित कथन और कथन की सूक्ष्म सांकेतिकता कहानी के शिल्प का अनिवार्य अंग बन गई है।''[5]

भाषा की नई तराश और समृद्ध शिल्प के कथा समकालीन हिंदी कहानी साहित्य की इतनी सशक्त विधा बन गयी है कि आज सम्पूर्ण जगत के अन्य साहित्य विधाओं में इसकी तुलना नहीं की जा सकती है।

आज के बदले हुए समय में सामाजिक ताना–बाना जिस तरह से बदला है उसने जीवन के कार्य व्यापार से लेकर कथा साहित्य को भी बदलने पर मजबूर किया है। आज का बदलता ढाँचा, कथ्य कर वैविध्य, भाषा और शिल्प का नयापन आज (समकालीन) के कथा साहित्य को नया आयाम दे रहा है। आज कहानी जिस तरह का दबाव झेल रही है वह आज के समय की परिस्थितियाँ हैं। आज ही नहीं हर दौर में कहानी, उपन्यास एवं आत्मकथा ने अपने समय के सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के दबावों को झेला है पर आज की कथा साहित्य अपने समय सामयिक मूल्यों के कहीं ज्यादा सम्प्रेषित कर रही है। साहित्य में शिल्प का बहुत बड़ा महत्व होता है। शब्द और सत्य अथवा भाषिक अभिव्यंजना के विभिन्न तरीकों को ही साहित्य शिल्प कहा जाता है। यह विचाराभिव्यक्ति का साधन है। प्रत्येक रचना का अपना कोई मूल संवेद्य (उद्देश्य) अवश्य होता है और रचनाकार उसे पाठक तक सम्प्रेषित करने के लिए शिल्प का ही सहारा लेता है। शिल्प रचनाकार की भाव सम्पदा को प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्ति देता है। वैसे शिल्प से अभिप्राय रचना और रचनाकार के कौशल से भी लगाया जाता है, जिस रचनाकार का शिल्प विधान जितना सूक्ष्म और मौखिक होगा उसका कथानक उतना ही अधिक संवेद्य और अर्थपूर्ण होगा।

शिल्प विधि का शाब्दिक अर्थ है– ''किसी चीज को बनाने या रचने का ढंग अथवा तरीका। किसी वस्तु के रचने की जो विधियाँ अथवा प्रक्रियायें हैं उनके समुच्चय को ही शिल्प विधि के नाम से पुकारा जाता है।''[6] किन्तु हम किसी भी रचना का मूल्यांकन वस्तु और शिल्प को अलग–अलग करके नहीं कर सकते। शिल्प का कथा से अन्तरंग संबंध है कथा या अन्तर्वस्तु की आधार पर ही शिल्प संरचना व भाषा निर्मित होती है। अनामिका का उपन्यास– 'तिनका तिनके पास' की संरचना कुछ इस तरह है– ''ता, देखो कितनी सस्ती चीजें लाया हूँ घर की खातिर। हूँ न मैं भी काम का लड़का।''[7]

समकालीन कथाकारों की भाषा बिल्कुल अपनी है। उन्हें जैसी चीजें आसानी से समझ में आती वह वैसे भाषा, बिम्ब एवं संरचनाओं को गढ़

लेते है। अनामिका का यह उपन्यास भाषायी संरचना में एक उपलब्धि है।

समकालीन कहानी हडसन की मान्यताओं को दर किनार करके आगे बढ़ चुकी है। आज की कहानी अपने पारम्परिक गिनाये छः तत्वों पर अब आधारित नहीं है। अब उसका पुराना रूप बदल गया है। उसके साथ–साथ नये प्रयोग हो रहे हैं। उसमें नये तत्वों का समावेश हो रहा है। कभी–कभी प्रयोग सीमा के परे भी हो जा रहा है। कुछ कहानियाँ ऐसी लिखी जा रही है जिसमें कहानीपन गायब नजर आता है। कहानी पर विधागत संकट आ गया है। आज की कहानी चिंतन प्रधान हो गयी है। उसमें बौद्धिकता का समावेश हो गया है। आज कहानी का अंत निष्कर्षात्मक या उपसंहारात्मक नहीं होता है। कहानी का अंत एक अधर में लटका हुआ सा लगता है, वह प्रश्न जगाकर मौन हो जाती है। आज वह दुखती रग पर ऊँगली रखकर अलग हो जाती है, समस्या के निदान का कोई नुस्खा नहीं बताती। कहानी में बदली हुई पाठकीय और लेखकीय अपेक्षाओं के कारण आज उसमें निबंध, रिपोर्ताज, संस्मरण जैसी गद्य विधाओं के अनेक तत्व अन्तर्भूत हो गये हैं। अपने वर्तमान रूप में आज कहानी का रूप बंध पूरी तरह बदला हुआ है।

''समकालीन कहानी का मुख्य पात्र निम्नमध्यवर्गीय मनुष्य ही है, जो अपने परिवेश से सम्पृक्त है और सामाजिक जड़ों द्वारा अस्तित्व की खुराक पा रहा है। वह प्रवृत्तिमूलक या अहममूलक व्यक्ति नहीं है। जीवन के घात–प्रतिघातों को सहता, घटता–घटाता, क्षुद्रता और मनुष्यता को सहेजता, नकारता, अपनी निर्णय शक्ति को बचाता–लुटाता, इसी दुनिया और जीवन के अस्तित्व में विश्वास, जाने–अनजाने नये क्षितिजों को उद्घाटित करता और नये संबंधों, संतुलनों को जन्म देता, जिन्दगी को वहन कर रहा है।''[8]

समकालीन कहानी में आकार की दृष्टि से भी नये–नये शैल्पिक प्रयोग प्राप्त होते हैं। कहानी में वैचारिकता के आग्रह ने लम्बी कहानी की भूमिका तैयार की। कहानियाँ लघु उपन्यास का भी रूप ले लिया है। एक और शैल्पिक प्रयोग है जिसे औपन्यासिक कहानी की संज्ञा भी दी गई है। समकालीन हिंदी कहानी ने अनेक नवीन शैल्पिक प्रयोग कर अपने स्वरूप को समृद्ध कर नवीन आकर्षण प्राप्त कर लिया है। आज कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर साहित्य की अत्यन्त गौरववान और सर्वाधिक समृद्ध विधा है।

समकालीन कहानी की प्रस्तुति का तरीका भी बदला है। चूंकि आज की कहानी यथार्थ का आग्रह बढ़ा है। इसलिए वह प्रायः मैं शैली में कही जाने लगी है। कहानी पढ़ने के बाद लगता है कि कहानीकार कहीं–न–कहीं या तो घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी है या परिस्थितियों का भोक्ता। समकालीन कहानियों की शरूआत 'Once Upon a time' या 'एक समय की बात है' वाक्यांशों से न होकर कहानीकार की किसी एक टिप्पणी से होती है। जैसे– ''यह झाड़ू सीधी किसने खड़ी की ? बीजी ने त्योरी चढ़ाकर विकट मुद्रा में पूछा।''[9]

संदर्भ–सूची

1. समकालीन उपन्यास : रचना और परिवेश, नयना, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, संस्करण–2012, पृ0 256
2. वही, पृ0 257
3. वही, पृ0 252
4. वही, पृ0 252
5. समकालीन कहानी : नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, दिल्ली, संस्करण 2011, पृष्ठ 144

6. समकालीन कहानी : नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक बुक्स, दिल्ली, संस्करण 2011, पृष्ठ 143

7. तिनका तिनके पास, अनामिका, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण–2008, पृ0 192

8. समकालीन लेखन और आधुनिक संवेदना, संपादक– कल्पना वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण– 2010, पृष्ठ 258

9. हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थ बोध के विविध रूप, डॉ० कृपाशंकर पाण्डेय, समीक्षा प्रकाशन, शिवकुटी इलाहाबाद, संस्करण 2010, पृष्ठ 139

Copyright © 2017, Akhilesh Kumar. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.